रीतिकाल- संवत 1700-1900

अर्थ :- रीति का शब्दार्थ है- प्रणाली, पद्धति, मार्ग, पन्थ, शैली आदि। लक्षणा से रीति का अर्थ होता है- विशिष्ट कार्य-पद्धति। काव्यशास्त्र की एक विचारधारा द्वारा रीति को काव्य की आत्मा माना गया है। रीति सिद्धान्त के प्रवर्तक हैं आचार्य वामन (समय ई० सन् की 9वीं शताब्दी के मध्य) इनके अनुसार रीति विशिष्ट पद रचना है। इस प्रकार रीति गुणों पर आधारित, सम्बन्धित है।

रीति का दूसरा सम्बन्ध पद-रचना से है। यह समास पर निर्भर है। अतः कुछ आचार्यों ने समासहीनता, स्वल्प समासता, दीर्घ समासता के रूप में रीतियों को देखा है।

रीतिकाल का समय :- हिन्दी साहित्य में रीति वाक्य का प्रयोग विशेष अर्थ में हुआ है। यहाँ पर रीति का तात्पर्य लक्षण देते हुए, या लक्षण को ध्यान में रखकर लिखे गये काव्य से होता है, इस प्रकार रीति काव्य वह काव्य है, जो लक्षण के आधार पर अथवा इसको ध्यान में रखकर रचा जाता है।

Scanned with Cam

अलंकार, रस, ध्वनि का मत है कि भले ही केशवदास ने सर्वप्रथम रीति ग्रन्थ की रचना की, परन्तु हिन्दी में रीति ग्रन्थों की परम्परा इसके 50 वर्ष बाद चली और वह भी एक भिन्न मत को पली। रस मत का अनुसरण करते हुए सर्वप्रथम रीति ग्रन्थ लिखने वाले आचार्य चिंतामणि त्रिपाठी थे। अतः यही हिन्दी के रीतिकाल का प्रारम्भ माना जाना चाहिए।

नामकरण :- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
रीतिकाल - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
श्रृंगारकाल - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
कला काल - रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'
अलंकृत काल - मिश्रबन्धु द्वारा

रीतिकाल के प्रवर्तक - (श्यामदास) - आ० केशवदास
रीतिकाल को प्रौढ़ देने का श्रेय - आ० केशवदास

रीतिबद्ध कवि :- चिन्तामणि, मतिराम, भूषण, देव, केशव, भिखारीदास, पद्माकर।
रीतिसिद्ध कवि :- बिहारी, सेनापति

रीतिमुक्त कवि :- घनानंद, बोधा, आलम ठाकुर

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ :-

1. श्रृंगारिकता,
2. अलंकरण का प्राधान्य
3. भक्ति और नीति
4. मुक्तक शैली का प्राधान्य
5. ब्रजभाषा का प्राधान्य
... नारी का भौतिक स्वरूप

Scanned with Cam